International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.newresearchjournal.com/multieducation
Volume 1; Issue 2; April 2016; Page No. 31-34

''विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

कु• नीलू सिंह

सहायक प्राध्यापक प्रेस्टन कॉलेज, ग्वालियर (मप्र)

सारांश–

विद्यालय वातावरण जितना उत्तेजक तथा शिक्षा प्रधान होता है, बालकों में समझने की शक्ति उतनी ही ज्यादा बढ़ती है तथा बालकों में समायोजन का विकास तेजी से होता है। जब बालक विद्यालय जाना प्रारम्भ कर देते हैं तो स्कूल द्वारा जितना अधिक शिक्षण अवसर बालकों को प्रदान किया जाता है, उनमें उतनी ही अधिक सूझ एवं समझ विकसित होती है। इस दृष्टि से विद्यालय वातावरण को बालकों के सामाजिक समायोजन पर प्रभाव को लेकर कुछ मतभेद है। इसके अतिरिक्त बालकों के सामाजिक समायोजन पर बालक के परिवार तथा उसके आस–पास का वातावरण तथा सामाजिक व आर्थिक कारणों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जैसे बालक का परिवार यदि संयुक्त परिवार है तो बालक का सामाजिक समायोजन काफी सरलता से हो जायेगा और यदि बालक का परिवार एकाकी है तो बालक के समायोजन में देर लगेगी। इसके अतिरिक्त यदि बालक अपने आस–पड़ोस के लोगों के साथ घुल–मिल कर रहता है, तब भी बालक का सामाजिक समायोजन तेजी से होगा। अतः इन सब परिस्थितियों तथा विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना नितान्त आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी समस्या पर प्रकाश डालने का एक प्रयास है एवं विद्यालय तथा उसके वातावरण का बालकों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव की तह तक जाने की कोशिश है।

मूल शब्दः– सामाजिक समायोजन, शिक्षा, विद्यालय वातावरण, माध्यमिक स्तर।

प्रस्तावना–

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता हे। सर्वागीण विकास से तात्पर्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक या नैतिक विकास से है। शिक्षा व्यक्ति के लिये एक ऐसा अनुकूल वातावरण तैयार कर देती हैं जो व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक क्षमताओं के निरन्तर विकास में सहायक सिद्ध होता है। बालक का विकास भी शिक्षा का ही प्रतिफल होता है। औपचारिक शिक्षा के सन्दर्भ में बालक के विकास का सारा दारोमदार विद्यालय पर तथा वहाँ के संसाधन और वातावरण पर होता है। बालक प्रारम्भ में कोरे कागज के समान होता है। समय के साथ वह पहले सरल विचारों को मन में धारण करता है तथा कालान्तर में विचारों से विचारों को जोड़कर अपने ज्ञान में वृद्धि करता जाता है। विद्यालय का वातावरण बालकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है, विद्यालय वातावरण में ही बालक का समुचित विकास होता हैं, विद्यालय में ही बालक के मन में सामाजिक समायोजन की भावना जाग्रत होती है। जिससे बालक समाज में अपनी भूमि का समझ पाता है। तथा उसके अनुसार अपनी भूमिका का निर्वाह करता है अतः बालकों के सामाजिक सामायोजन में विद्यालय महती भूमिका निभाता है।

विद्यार्थियों के लिये समायोजन की भावना बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यदि वह समायोजित नहीं होगा तो वह कक्षा में अपने सहपाठियों के साथ मिल जुलकर नहीं पढ़ जायेगा और न ही उनकी मदद ले पायेगा। इसी तरह विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों के साथ भी कुशल समायोजित होना चाहिये, इसके अभाव में वह अपने शिक्षकों की शिक्षा का पूर्ण लाभ नहीं उठा पायेगा तथा शिक्षक बालक से क्या अपेक्षा करता है वह नहीं जान पायेगा। इस तरह बालक शिक्षा के अनुकूल कार्य करने में स्वयं को असमर्थ पायेगा और बालक के सफल होने की संभावना कम हो जायेगी। छात्रों में सामाजिक समायोजन की भावना का विकास करने में समाज शास्त्र तथा कुछ अन्य विषय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामान्य तौर पर पूर्व माध्यमिक तक के बच्चों में सामाजिक समायोजन की भावना कम ही पायी जाती है। माध्यमिक तथा उससे ऊपर की कक्षाओं में ही समायोजन की भावना देखने कों मिलती है। वैसे बालकों में सामाजिक समायोजन की भावना जाग्रत करने की शुरूआत परिवार से होती है, उसके पश्चात समायोजन की भावना दृढ़ करने में विद्यालय का स्थान है। यदि छात्र अपने आप को विद्यालय के वातावरण में समायेाजित कर लेता है तो वह स्वयं को समाज के साथ भी समायोजित कर लेगा। प्रारम्भिक बाल्यावस्था या उत्तर बाल्यावस्था में बालक सर्वप्रथम अपने खिलौने से स्वयं को समायोजित करता है, वह उसके साथ खेलता है यदि कोई उसका खिलौना छीनता है तो वह रोने लगता है। इसी तरह उत्तर बाल्यावस्था में बालक अपने हम उम्र के साथियों के साथ स्वयं को समायोजित करता हैं और उनके साथ खेलने लगता है और अपने मित्रों के साथ खेलते–खेलते इतना अधिक समायोजित हो जाता है कि कभी–कभी घर वालो के बुलाने पर भी वह नहीं जाता तथा दोस्तों के साथ खेलता रहता है। समायोजन की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया होती है, इसका विकास बालकों में धीरे–धीरे ही होता है फिर भी यदि इसमें कुछ बातों का विशेष ध्यान दिया जाय तो बालकों में समायोजन की भावना का विकास काफी आसान हो जाता है। सर्वप्रथम बालकों के समायोजन में परिवार की भूमिका हैं। अतः यदि परिवार के लोग बालकों को अन्य बालकों के साथ मिल–जुलकर रहने तथा खेलने के लिए प्रोत्साहित करें तो बालक में शुरूआत में ही समायोजन की भावना जाग्रत हो जाती है। इसके पश्चात विद्यालय तथा वहाँ का वातावरण बालकों के कुशल समायोजन के लिये उत्तरदायी हैं। जिसमें शिक्षक की भूमिका निसन्देह सर्वोपरि है, शिक्षक बालकों को अपने सहपाठियों के साथ मिल–जुलकर कर पढ़ने तथा उनमें आपस में सहयोग की भावना के विकास के लिये प्रेरित कर सकता है। इसमें शिक्षक का अन्य शिक्षकों तथा छात्रों के साथ व्यवहार भी बालकों का पथ प्रदर्शन कर सकता है। शिक्षक छात्रों को अपना आदर्श मानते हैं । अतः छात्र शिक्षक को देखकर ही स्वयं उसी प्रकार अनुकरण करते हैं। इस प्रकार शिक्षक जो कि विद्यालय के वातावरण का एक महत्वपूर्ण

अंग है। बालकों के सामाजिक समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

समस्या कथन–
विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य –
माध्यमिक स्तर पर विद्यालयी वातावरण की विभिन्न विमाओं (सृजनात्मक उद्दीपक, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकारोक्ति, अनुमतिकरण, अस्वीकृति, नियंत्रण) का विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

न्यादर्श एवं न्यादर्श विधि –
प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्ता ने साधारण यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके अध्ययन से सम्बन्धित जनसंख्या में से न्यादर्श का चुनाव किया था। शोधकर्ता ने ग्वालियर जिल में स्थित माध्यमिक कक्षा के 200 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के लिए शामिल किया गया।

विधि–
प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

उपकरण प्रविधियाँ–
साक्षात्कार, अनुसूची, अवलोकन, प्रश्नावली , काई–वर्ग परीक्षण।

परिकल्पनाएँ –
माध्यमिक स्तर पर विद्यालयी वातावरण की विभिन्न विमाओं (सृजनात्मक उद्दीपक, संज्ञानात्मक प्रोत्साहन, स्वीकारोक्ति, अनुमतिकरण, अस्वीकृति, नियंत्रण) का विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर प्रभाव पड़ता है।

आँकड़ो का विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण–
प्रस्तुत शोध पत्र में उद्दश्ेय के अनुसार आंकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन किया गया जो निम्नवत हैं–

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'सृजनात्मक उद्दीपक' का प्रभाव पड़ता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'सृजनात्मक उद्दीपक' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका - 1: विद्यालयी वातावरण की विमा 'सृंजनात्मक उद्दीपक' की उच्च तथा निम्न स्थिति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर प्रभाव की तालिका

समाजिक समायोजन / नियन्त्रण	उच्च	निम्न	योग	काई–वर्ग का परिगणित मान	df का मान	df पर काई–वर्ग का सारणीमान	परिणाम
उच्च	36	71	107	4.487	1	3.841	भ्€ अस्वीकृत
निम्न	45	48	93				
योग	81	119	200				

तालिका 1 से स्पष्ट है कि काई–वर्ग का परिगणित मान 0.05 सार्थकता स्तर पर काई–वर्ग का सारणीमान से अधिक है। अतएव (H_{01}) शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है और (H_{01}) स्वीकृत की जाती है अर्थात् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'सृजनात्मक उद्दीपक' का प्रभाव पड़ता है।

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'संज्ञानात्मक प्रोत्साहन' का प्रभाव पड़ता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'संज्ञानात्मक प्रोत्साहन' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका - 2: विद्यालयी वातावरण की विमा 'संज्ञानात्मक प्रोत्साहन' की उच्च तथा निम्न स्थिति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर प्रभाव की तालिका

समाजिक समायोजन / संज्ञानात्मक प्रोत्साहन	**उच्च**	**निम्न**	**योग**	**काई–वर्ग का परिगणित मान**	**df का मान**	**df पर काई–वर्ग का सारणीमान**	**परिणाम**
उच्च	38	54	92	0.007	1	3.841	HO स्वीकृत
निम्न	44	64	108				
योग	**82**	**118**	**200**				

तालिका 2 से स्पष्ट है कि काई–वर्ग का परिगणित मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीमान से कम है। अतएव (H_{o2}) शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और (H_2) अस्वीकृत की जाती है अर्थात् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'संज्ञानात्मक प्रोत्साहन' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'स्वीकारोक्ति' का प्रभाव पड़ता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'स्वीकारोक्ति' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका - 3: विद्यालयी वातावरण की विमा 'स्वीकारोक्ति' की उच्च तथा निम्न स्थिति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर प्रभाव की तालिका

सामाजिक समायोजन / स्वीकारोक्ति	**उच्च**	**निम्न**	**योग**	**काई–वर्ग का परिगणित मान**	**df का मान**	**df पर काई–वर्ग का सारणीमान**	**परिणाम**
उच्च	49	78	127	0.291	1	3.841	HO स्वीकृत
निम्न	31	42	73				
योग	80	120	200				

तालिका 3 से स्पष्ट है कि काई–वर्ग का परिगणित मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीमान से कम है। अतएव (H_{o3}) शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और (H_3) अस्वीकृत की जाती है अर्थात् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'स्वीकारोक्ति' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'अनुमतिकरण' का प्रभाव पड़ता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'अनुमतिकरण' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका - 4: विद्यालयी वातावरण की विमा 'अनुमतिकरण' की उच्च तथा निम्न स्थिति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर प्रभाव की तालिका

समाजिक समायोजन / अनुमतिकरण	उच्च	निम्न	योग	काई–वर्ग का परिगणित मान	df का मान	df पर काई–वर्ग का सारणीमान	परिणाम
उच्च	49	62	111	0.471	1	3.841	HO स्वीकृत
निम्न	35	54	89				
योग	84	116	200				

तालिका 4 से स्पष्ट है कि काई–वर्ग का परिगणित मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीमान से कम है। अतएव (H_{o4}) शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और (H_4) अस्वीकृत की जाती है अर्थात् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'अनुमतिकरण' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'अस्वीकृति' का प्रभाव पड़ता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'अस्वीकृति' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका - 5: विद्यालयी वातावरण की विमा 'अस्वीकृति' की उच्च तथा निम्न स्थिति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर प्रभाव की तालिका

समाजिक समायोजन / अस्वीकृत	उच्च	निम्न	योग	काई–वर्ग का परिगणित मान	Df का मान	df पर काई–वर्ग का सारणीमान	परिणाम
उच्च	36	67	103	2.713	1	3.841	HO स्वीकृत
निम्न	45	52	97				
योग	81	119	200				

तालिका 5 से स्पष्ट है कि काई–वर्ग का परिगणित मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीमान से कम है। अतएव (H_{o5}) शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और (H_5) अस्वीकृत की जाती है अर्थात् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'अस्वीकृति' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'नियंत्रण' का प्रभाव पड़ता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'नियंत्रण' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका - 6: विद्यालयी वातावरण की विमा 'नियंत्रण' की उच्च तथा निम्न स्थिति के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर प्रभाव की तालिका

सामाजिक समायोजन / नियंत्रण	उच्च	निम्न	योग	काई–वर्ग का परिगणित मान	df का मान	df पर काई–वर्ग का सारणीमान	परिणाम
उच्च	27	58	85	1.151	1	3.841	HO स्वीकृत
निम्न	45	70	115				
योग	72	128	200				

तालिका 6 से स्पष्ट है कि काई–वर्ग का परिगणित मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीमान से कम है। अतएव (H_{o6}) शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और (H_6) अस्वीकृत की जाती है अर्थात् विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर विद्यालयी वातावरण की विमा 'नियंत्रण' का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष–

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अध्ययन से मनुष्य पुनः जन्म लेता है और पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। शिक्षा के द्वारा वह अपने चतुर्दिक वातावरण को भी परिष्कृत करता है तथा विश्व को रहने योग्य बनाता है और इस कार्य में विद्यालय प्रमुख निभाता है। औपचारिक शिक्षा के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के विकास का सम्पूर्ण दायित्व विद्यालय तथा उसके वातावरण का होता है। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। विद्यालय वातावरण में ही बालक का समुचित विकास होता है। विद्यालय में ही बालक के मन में सामाजिक समायोजन की भावना का विकास होता है, जिससे बालक समाज में अपनी भूमिका समझ पाता है। अतः विद्यालय के वातावरण का अध्ययन आवश्यक है जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि विद्यालय के वातावरण से सम्बन्धित ऐसे कौन–कौन से कारक हैं? जो विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यार्थियों के लिए समायोजन की भावना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि यदि वह समायोजित नहीं होगा तो वह अपनी शिक्षा प्राप्ति का लक्ष्य नहीं प्राप्त कर पायेगा और समाज के हितों के अनुकूल कार्य नहीं कर सकेगा और न ही सफलता की प्राप्ति कर सकेगा। यदि विद्यार्थी स्वयं को विद्यालय में समायोजित कर लेता है तो वह समाज में भी आसानी से समायोजन कर सकता है। विद्यालयी वातावरण का सामाजिक समायोजन पर प्रभाव को लेकर विद्वानों में मतभेद है। अतः

वातावरण का सामाजिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अतिरिक्त विद्यालय वातावरण का अध्ययन कर उसमें निहित कमियों को उजागर किया जा सकता है जिससे इन कमियों को सुधार कर विद्यालय वातावरण को और अधिक परिष्कृत रूप दिया जा सके। इसके अतिरिक्त विद्यालयी वातावरण का अध्ययन करने से सामाजिक समायोजन में विद्यालय की भूमिका का मूल्यांकन किया जा सकेगा तथा विद्यालयी वातावरण को सर्वोत्तम बनाने में मदद मिल सकेगी जिससे बालक का विद्यालय तथा समाज में समायोजन शीघ्रता से हो सकेगा।

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में विद्यालयी वातावरण की जिस विमा का प्रभाव सर्वाधिक पड़ता है वह विमा 'सृजनात्मक उद्दीपक' है इसके अतिरिक्त विद्यालयी वातावरण की अन्य विमाओं का प्रभाव विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन पर नहीं पड़ता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि विद्यालयी वातावरण की विमाएँ (नियंत्रण, अस्वीकृत, अनुमतिकरण, स्वीकारोक्ति) आदि विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन की भावना का विकास नहीं करती है और यदि विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमता का विकास किया जाय और ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाय जिससे विद्यार्थियों को सृजनात्मकता के लिए प्रेरित किया जा सके तो विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन की भावना का विकास किया जा सकता है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन की भावना को बढ़ाने में विद्यालय का वातावरण भी भूमिका का निर्वाह करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. रावत, ए. (2003). स्लम ऐरियाज में निवास करने वाले बालकों एवं बालिकाओं के षैक्षिक विकास का उनके लिंग व मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में अध्ययन अलीगढ. विष्वविद्यालय, अलीगढ.
2. पटेल, ब्रजेष (2008). सामाजिक रूप से वंचित तथा लाभान्वित विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकाक्षा का उनके संज्ञानात्मक तथा व्यक्तित्व विभेदको, लिंग एव ं क्षेत्रीयता के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन. उत्कल विष्वविद्यालय, भुवनेष्वर, उड़ीसा
3. सेन, गुप्ता पदमिनी ''पायनियर वूमेन ऑफ इण्डिया'' ठक्कर एण्ड को लि., मुम्बई
4. सेन, गुप्ता पदमिनी (1960) ''वूमेन एजूकेशन इन इण्डिया''पब्लिक शिक्षा मन्त्रालय, नई दिल्ली
5. सेन, एन.बी. (1969) ''प्रोग्रेस ऑफ वूमेन एजूकेशन इन फ्री इण्डिया'' न्यू बुक सोसाइटी ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली
6. हैट सी.ए. ''चेंजिंग स्टेट्स ऑफ वूमेन'' एलाइड पब्लिशर्स, नई दिल्ली
7. अग्रवाल डा. वी.पी. ''राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारतवर्ष में आधुनिक शिक्षा का आलोचनात्मक अध्ययन'' अनु बुक्स शिवाजी रोड, मेरठ
8. ओड़ लक्ष्मीलाल के. ''शिक्षा के नूतन आयाम'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
9. इन्द्रा ''स्टेटस आफ वूमेन इन एनसियेन्ट इण्डिया'' मोतीलाल बनारसीदास पब्लिर्श, बनारस
10. कौर राजक ुमारी अमृत ''द वूमेन'' नवजीवन पब्लिर्श हाऊस, अहमदाबाद
11. कपिल एच.के.(1992) ''अनुसंधान विधियां'' हरप्रसाद भार्गव, आगरा
12. करलिंगर फ्रेड एन. ''फाउण्डेशन आफ विहेवियर रिसर्च'' सुरजीत पब्लिकेशन्स, दिल्ली
13. कोवन मीना जी.(1992) ''एजुकेशन आफ वूमेन इन इण्डिया'' ओलीफेन्ट एनर्सन एण्ड फेरियर लन्दन